ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 12 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

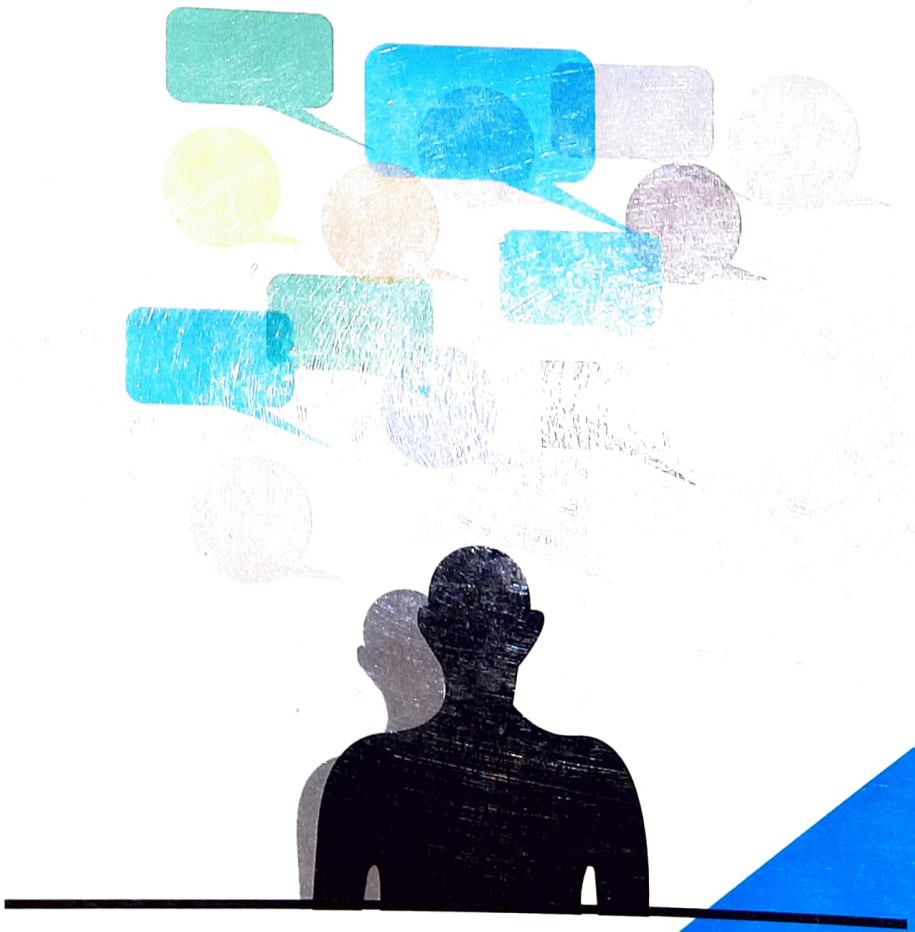

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

वर्ष : 12 अंक : 1 ❑ जनवरी-फरवरी, 2020

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

प्रो. लॉरेंस ओएडिजी
वेगेनिंग्न विश्वविद्यालय, नीदरलैंड

डॉ. मार्टिन ग्रिन्डले
नॉटिंग्म विश्वविद्यालय, लंदन

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबोरोग, ओन्टारियो

डॉ. दया शंकर तिवारी
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. सुरज नन्दन प्रसाद
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया

डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. सी.पी. शर्मा
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग

डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची

डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका

डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा

डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091
फोन : 011-22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India

Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका संपादक संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

'पूस की रात' कहानी में अभिव्यक्त किसान का जीवन–राम चरण मीना 1250
एकात्ममानववादी भारतीय संस्कृति के प्रवर्तक पंडित दीनदयाल उपाध्याय–डॉ० सुनीता 1253
श्री जगलाल चौधरी का प्रारंभिक जीवन : एक अवलोकन–तृप्ति भारती 1256
सोनपुर मेला क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि: एक अध्ययन–अमिताभ बच्चन; डॉ० देवेन्द्र प्रसाद सिंह 1259
वृहत्तर भारत की चित्रकला: क्षेत्रीय शैली के सन्दर्भ में–रघु यादव 1262
अन्तर्वशी : आधुनिक नारी चित्रण का दस्तावेज–डॉ० भारती वळवी (वाघ) 1265
गांधीजी की 'हिन्दुस्तानी' की संकल्पना और हिन्दी-उर्दू विवाद–डॉ० रमेश कुमार बर्णवाल 1268
किशोरावस्था में होने वाले आक्रामकता के कारकों एवं प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन–प्रियंका सिंह; डॉ० वंदना कुमारी; नेहा कुमारी 1271
प्राचीन भारतीय यक्ष मूर्तियों का वस्त्रालंकरण विधान: एक समीक्षात्मक अध्ययन–अवधेश कुमार; प्रो० देवेन्द्र कुमार गुप्ता 1277
राजस्थान के बाडमेर जिले में मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र पर वर्षा का प्रभाव–डॉ० चन्दन मल शर्मा; डॉ० गौरव कुमार जैन 1280
शहरी क्षेत्र के विविध वर्ग की महिलाओं की शिक्षा में भागीदारी का विश्लेषण -
धुले (महाराष्ट्र) जनपद एक भौगोलिक अध्ययन–संजय बी० घोडसे 1285
ब्रह्माण्डीय परिपेक्ष्य में गुरु नानक वाणी–कुलदीप कौर पाहवा 1289
श्याम मोहन अस्थाना का नाट्य साहित्य–रोशन कुमार 1292
17वीं लोकसभा चुनाव के परिप्रेक्ष्य में बिहार में महिलाओं के मतदान व्यवहार की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० तेलानी मीना होरो 1295
दलित आन्दोलन का उद्भव एवं विकास–कलवीर कौर 1298
मध्य प्रदेश के सामाजिक - आर्थिक विकास में नर्मदा नदी की भूमिका का अध्ययन–डॉ० विजय ग्रेवाल 1301
वर्तमान समय में विद्यार्थियों के तनाव, समायोजन एंव उनकी अध्ययन आदतों पर योग का प्रभाव -
विश्लेषणात्मक अध्ययन–सन्त कुमार मिश्र; डॉ० अजय कुमार दुबे 1305
'सरोज स्मृति' - शोक काव्य के रूप में एक अनुशीलन–डॉ० ज्योति श्रीवास्तव 1308
सद्गुण और योग की पद्धतियाँ - एक दार्शनिक अध्ययन–प्रिया कुमारी तिवारी 1312
भारतीय कला संस्कृति एवं परम्परा–डॉ० मंजु सिंह 1315
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों में स्थापत्य कला–डॉ० मनीषा सिंह 1317
समकालीन कहानी में सामाजिक और पारिवारिक सम्बन्धों में उलझी नारी–डॉ० अनु शर्मा 1319
स्त्री जीवन के दु:ख की कथा त्यागपत्र–डॉ० वाचस्पति यादव 1322
अंबेडकर का सामाजिक न्याय–डॉ० विन्नी जैन 1326
वर्तमान भारतीय विधि में शिक्षा के अधिकार की स्थिति–अरविन्द कुमार गुप्ता 1331
शिक्षा में स्त्रियों की भूमिका–कुमारी श्वेता 1337
जनपद प्रयागराज (इलाहाबाद) में गंगानदी प्रदूषण स्तर-कारण एवं निवारण–वृजेश कुमार; डॉ० राजीव कुमार चौरसिया 1341
ममता कालिया एवं वर्षा अडाल जी के चुने हुए उपन्यास के आलोक में नारी अस्मिता–डॉ० श्रीधर हेगडे; भैरवी आर पंड्या 1347
अज्ञेय के उपन्यासों में पारिवारिक संदर्भ–डॉ० अंबुजा एन् मलखेडकर 1350
डिजिटल अन्तर जाल में हिंदी का बढ़ता प्रभाव–क्रमांक शुक्ला 1354
पंजाबी किस्सा काव्य में वारिस शाह रचित हीर का कथासूत्रिया अध्यन–पूजा दुआ 1359
भारतीय समाज में महिलाओं की बदलती प्रस्थिति: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–नीशू चौहान; डॉ० रमाकान्त ठाकुर 1362
कर्मफल सिद्धांत एवं भगवद्गीता–प्रवीण कुमार 1369
शारीरिक दिव्यांगता एक सामाजिक अध्ययन–प्रियंका कुमारी 1372
स्वातंत्र्योत्तर भारत में संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की स्थिति–डॉ० मीना गुप्ता 1374
विभिन्न प्रश्नों को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत करनेवाले प्रयोगात्मक मराठीनाटककार : शफात खान–प्रा० डॉ० रवींद्र मधुकर कांबळे 1378
भारत में शहरी परिवार और वृद्ध: एक विश्लेषण–डॉ० प्रेमलता 1381

स्वातंत्र्योत्तर भारत में संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं की स्थिति

डॉ० मीना गुप्ता

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, संस्कृत -विभाग, पी.पी.एन कालेज कानपुर

पत्रकारिता सूचनाओं का स्रोत एवं संचार का माध्यम है यह सम्पूर्ण दिवस में घटित होने वाली घटना का अत्यंत बारीकी से अध्ययन कर वास्तविक रूप में हमारे सामने उपन्स्त कर सजग रक्षकवत् समाज मे व्याप्त कुरीतियों, विसंगतियों को हटाकर मानव मूल्यों तथा राष्ट्रीय भावनाओं को स्थापित कर संगठित रूप से प्रस्तुत करने की कला है। पत्रकार विशिष्टा वृत्तिः पत्रकारिता महाभारत में 'का वार्ता किमाचर्यमिति नैकत्र वार्ता शब्दःप्रयुक्तोऽस्ति'। शब्द कल्पद्रुम तथा अमरकोश में वृतांत, संवाद, वार्ता, प्रवृत्ति, उदंत, श्रुति, इत्यादि अर्थो में वार्ता शब्द का प्रयोग किया गया हिंदी शब्द सागर के अनुसार- पत्रकार का काम या व्यवसाय ही पत्रकारिता है।[1]

डॉ. अर्जुन तिवारी के अनुसार- ज्ञान और विचार को कलात्मक ढंग से लोगों तक पहुंचाना ही पत्रकारिता है। यह समाज का मार्गदर्शन भी करता है।[2] प्रसिद्ध संपादक प्रभाष जोशी के अनुसार- न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका और प्रेस में यदि चौथा खंभा हूं तो पत्रकार होने के नाते मेरा अपना अधिकार और कर्तव्य हैं कि मैं इन 3 खंभों को जज करूं अतः स्पष्ट होता है कि पत्रकारिता लोकतंत्र का महत्वपूर्ण स्तंभ है, इसमें बहुत शक्ति है और इस पर महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां हैं अतः पत्रकारिता का सम्मान अवश्य किया जाना चाहिए।[3]

पत्र-पत्रिकाओं में वार्ताओ का संकलन लेखों का एकत्रीकरण और उन वार्ताओं और लेखों का संपादन और फिर उनके प्रकाशन की व्यवस्था पत्रकारिता कही जाती है यह मानव जीवन के विविध पक्ष सेएकत्रित संबंधित है और यह मानव को समाज से, समाज को राष्ट्रों से, राष्ट्र को विश्व से संयोजित करने का प्रयास करती है साथ ही लोगों को जागरूक करने का भी प्रयास करती है हम कह सकते हैं कि पत्रकारिता का उद्देश्य सूचना को फैलाना, जीवन में आनंद मनोरंजन का संचार करना, साथ ही जनता को शिक्षित करना या जन जागरण करना तथा लोगों की अनंत वैविध्य पूर्ण जिज्ञासा को शांत करना है पत्रकारिता का प्रयोजन यह है कि विद्वानों के विनोद के लिए तथा शोध के अनुसंधित्सुओ के हित के लिए, छात्रों के ज्ञान वर्धन के लिए लिखा जाता है इसकी विकास यात्रा पर दृष्टि डालें तो हमें संस्कृत पत्रकारिता की स्थिति अत्यंत कष्टप्रद दिखाई देती है यह धना भाव लेखक का अभाव मुद्रणाभाव तथा ग्राहका भाव से जूझती हुई अपने अस्तित्व को बचाय रखने में पूर्णतः समर्थ रही है। विद्योदय, संस्कृत चंद्रिका, उषा, सहृदया, मित्रगोष्ठी, मञ्जुभाषिणी, सूनृतवादिनी, शारदा, श्री, सारस्वती सुषमा, सागरिका आदि अनेक ऐसी पत्र- पत्रिकाएं हैं इनमें महनीय शोध निबंधों का भी प्रकाशन हुआ है तथा संपादकीय द्वारा संपादकों के रचना कौशल एवं तत्व विवेचिनी बुद्धि का परिज्ञान होता है।[4] ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोक के शिला लेखों का निर्माण पत्र कारिता की भांति जन सामान्य के लिए हुआ था यह लेख विभिन्न स्थानों पर उत्कीर्ण कराने का यह प्रयोजन था कि यह पत्रकारिता अनंत काल तक होगी। लेखों की भाषा उस काल के लोगों के अनुरूप थी।[5]

19वीं शताब्दी में पत्र-पत्रिकाओं का प्रादेशिक तथा अंग्रेजी भाषा के क्षेत्र में प्रकाशन शीघ्रता से बढ़ रहा था इसी प्रणाली से प्रभावित होकर संस्कृत के विद्वानों ने सर्वप्रथम पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ किया क्योंकि संस्कृत को मृत् भाषा से अभिहित किया जाने लगा 'सूनृत वादिनी' पत्रिका में अप्पा शास्त्री की घोषणा प्रकाशित की जाती

थीं 6 19वीं शताब्दी में अनेक पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित हुई संस्कृत के अनेकों श्लोक उनमें प्रकाशित होते थे हिंदी का पहला पत्र उदंत मार्तंड था 7 जिस के प्रधान संपादक जुगल किशोर शुक्ला जी थे उन्होंने इसमें अनेकों श्लोक प्रकाशित किए जो संस्कृत में थे साथ ही पत्र का नाम भी संस्कृत में था। किंतु संस्कृत के क्षेत्र में शुद्ध संस्कृत मासिक पत्र काशी विद्या सुधा निधि नाम से प्रकाशित हुआ 1 जून 1866 को इसका दूसरा नाम पंडित भी था और यह लगातार 1917 तक प्रकाशित होता रहा यह मासिक पत्र था इसके प्रकाशक ई जे लाजरूस थे।

इसके प्रकाशन का उद्देश्य अप्रकाशित और अप्राप्य पुस्तकों को प्रकाशित करना था तथा अनेक उच्च कोटि के प्राचीन प्रामाणिक ग्रंथों का प्रकाशन भी करना था। 1947 में सुरभारती पत्रिका का प्रकाशन मुंबई से प्रारंभ हुआ यह 32 पृष्ठात्मक पत्रिका थी इसके संपादक श्री गोविंद बल्लभ शास्त्री थे। 1951 संस्कृत भवितव्यम्पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ इसके संपादक श्रीधर भास्कर वर्णेकर इसके 4 वर्षों तक प्रकाशित किया तत्पश्चात वराड पांडे इसका संपादन कर रहे हैं का वार्षिक मूल्य रु. 5 प्रकाशन स्थल हिंदी भवन नागपुर है। इसमें समाचारों के साथ-साथ भाषण भी प्रकाशित किए जाते हैं समाचार पत्र की भाषा सरल है बालकों के लिए भी कुछ सामग्री इसमें प्रकाशित होती है और आधुनिक विज्ञान के लिए भी पत्र में स्तम्भ बना रहता है छोटी-छोटी रुचिकर कहानियों का भी प्रकाशन इसमें किया जाता है। पण्डित पत्रिका 1953 में इसका प्रकाशन किया गया यह पत्रिका अखिल भारतीय पंडित महापरिषद् धर्म संघ दुर्गा कुंड वाराणसी से प्रकाशित है एक उच्च कोटि का पत्र है और लगातार प्रकाशित हो रहा है। इसमें धार्मिक निबंधों का वाद -विवाद तथा संस्कृत विद्यालय की परीक्षा फलों का प्रत्येक सोमवार को प्रकाशन होता था। 1955 में भाषा साप्ताहिक पत्रिका का संपादन गौ0सा0 श्री काशी कृष्ण आचार्य और सोमया जी के द्वारा किया गया। गुंटूर से प्रत्येक सोमवार को इसका प्रकाशन होता था।[8]